चीनी उद्योग की बढ़ी चिंता

सूखा प्रभावित राज्यों में चीनी रिकवरी घटी, उत्पादकता गिरी, कई मिलों में पेराई बंद

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : सूखे की वजह से प्रमुख गन्ना उत्पादक राज्यों की चीनी मिलों में पेराई बंद हो चुकी है। दूसरी तरफ फरवरी में चीनी की उत्पादकता में बुरी तरह गिरावट आई है, जो चीनी उद्योग के लिए गंभीर चिंता का विषय है। वहीं, चीनी मिलों के संगठन का मानना है कि चीनी की घरेलू मांग में आई तेज गिरावट के चलते चीनी की कोई कमी नहीं आ सकेगी। चीनी उद्योग का दावा है कि आने वाले दिनों में चीनी मूल्य में कोई तेजी नहीं आएगी।

चालू चीनी वर्ष में 2.13 करोड़ टन चीनी उत्पादन का अनुमान है। इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (इस्मा) की बैठक में चीनी की घटती उत्पादकता पर गंभीर चिंता जताई गई। दो साल के दौरान पड़े सूखे के चलते महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में गन्ने की उत्पादकता बुरी तरह प्रभावित हुई है। कुछ क्षेत्रों में तो फरवरी में गन्ने की उत्पादकता प्रति हेक्टेयर 40 से 50 फीसद तक घट गई है। पेराई सीजन के दौरान महाराष्ट्र में गन्ने की कमी के चलते ज्यादातर मिलें बंद हो चुकी हैं। चीनी मिल मालिकों की बैठक में विचार-विमर्श के दौरान सदस्यों के अनुमान के आधार पर 2016-17 के चीनी वर्ष में चीनी का उत्पादन 2.03 करोड़ टन रहने की संभावना है। महाराष्ट्र की 17 मिलों को छोड़ बाकी में पेराई समय से पहले बंद हो चुकी है। यहां चीनी का उत्पादन किसी भी हाल में 42 लाख टन से अधिक नहीं होगा। कर्नाटक में 21 लाख टन चीनी उत्पादन का अनुमान है। इसके विपरीत मानसून की अच्छी बारिश के चलते उत्तर प्रदेश में चीनी की रिकवरी दर में संतोषजनक सुधार हुआ है। सूखा प्रभावित राज्यों के मुकाबले राज्य में चीनी का उत्पादन बढ़ेगा। राज्य की 107 मिलों में पेराई जारी है, जो पिछले कई साल के मुकाबले बहुत अधिक है। चीनी उत्पादन में पिछले साल के मुकाबले नौ लाख टन अधिक उत्पादन होने का अनुमान है। ज्यादातर मिलों में अप्रैल तक पेराई जारी रह सकती है। चालू सीजन में 85 लाख टन चीनी बनाए जाने की संभावना है।

इस्मा की बैठक में बताया गया कि पहले चार महीने में चीनी का उठाव 7.5 लाख टन कम हुआ है। मांग घटने की मूल वजह बड़े उपभोक्ताओं की मांग में आई कमी और नोटबंदी को बताया जा रहा है। राशन की चीनी से सब्सिडी खत्म करना भी प्रमुख कारणों में शुमार है। इस्मा के मुताबिक पिछले साल चीनी की कुल मांग 2.48 करोड़ टन रही, जबकि चालू सीजन में यह मांग 2.38 से 2.40 करोड़ टन तक सिमट सकती है। इस्मा का मानना है कि घरेलू स्तर पर चीनी की कोई कमी नहीं होगी।

गिरावट

- उत्तर प्रदेश को छोड़कर बाकी राज्यों में घटा उत्पादन
- चीनी की घरेलू मांग में गिरावट के चलते नहीं बढ़ेंगे मूल्य

Dainik Jagaran
8/3/17